सरकार सुलभ बना रही किसानों की घरेलू... 12

गंगा स्वच्छता, जल जीवन मिशन में लापरवाही पर... 10

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्षः 14 | अंकः 135
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12
शनिवार | 25 फरवरी, 2023

फसलों में जैविक उर्वरक का इस्तेमाल करने की किसानों को दी गई सलाह

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होने के साथ भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है।

यह बात सीएसए के शोध निदेशालय के सहायक निदेशक शोध डॉ.मनोज मिश्र ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों के लिए एडवाइजरी जारी करते हुए कही। जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक होते हैं तथा इनके प्रयोग से पर्यावरण पर विपरीत असर नहीं पड़ता है। उजायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है।

जैव उर्वरकों के इस्तेमाल से बढ़ेगी फसलों की पैदावार

दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता पर किसानों को वैज्ञानिकों ने दी जानकारी

डॉ मनोज मिश्र।

कम खर्च में होता है अधिक उत्पादन

कानपुर, 24 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शोध निदेशालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है। उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक हैं इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। तथा पर्यावरण पर विपरीत असर भी नहीं पड़ता है। उन्होंने कहा जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक भी हैं। डॉ मिश्र ने सलाह दी है कि जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है इसके लिए किसान भाई बुवाई के पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें।डॉक्टर पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट(दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं। पानी के ठंडा होने के उपरांत राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं। 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से मिलाकर हवा में सूखने देते हैं। तत्पश्चात बीजों की खेत में बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं। जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ होता है।

हिन्दी दैनिक

विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें।
9870715738

रहस्य संदेश

RNI. NO. UPHIN/2007/20715

वर्ष – 17, अंक – 55, एटा से प्रकाशित, शनिवार, 25 फरवरी, 2023 पृष्ठ : 8 मू

जैव उर्वरक,रासायनिक उर्वरकों के पूरक, कम लागत में अधिक फसल उत्पादन: डा0 मनोज मिश्र

(अनवर अशरफ) कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शोध निदेशालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है। उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक हैं इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। तथा पर्यावरण पर विपरीत असर भी नहीं पड़ता है। उन्होंने कहा जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक भी हैं। डॉक्टर मिश्र ने सलाह दी है कि जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है इसके लिए किसान भाई बुवाई के पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें।डॉक्टर पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट(दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं। पानी के ठंडा होने के उपरांत राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं। 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से मिलाकर हवा में सूखने देते हैं। तत्पश्चात बीजों की खेत में बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं। जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ होता है।

जैव उर्वरक,रासायनिक उर्वरकों के पूरक

कम लागत में अधिक फसल उत्पादन

डी टी एन एन। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के शोध निदेशालय के सहायक निदेशक शोध डॉ मनोज मिश्र

ने जायद में दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों की उपयोगिता विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि भारत दलहनी फसलों का प्रमुख उत्पादक देश है दलहनी फसलों में जैव उर्वरकों के प्रयोग करने से वायुमंडल में उपस्थित नत्रजन पौधों को अमोनिया के रूप में सुगमता से उपलब्ध होती है। उन्होंने बताया कि जीवाणु प्राकृतिक हैं इनके प्रयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। तथा पर्यावरण पर विपरीत असर भी नहीं पड़ता है। उन्होंने कहा जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक भी हैं। डॉक्टर मिश्र ने सलाह दी है कि जायद फसल में मूंग एवं उड़द की बुवाई का समय चल रहा है इसके लिए किसान भाई बुवाई के पूर्व बीजों को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें।डॉक्टर पाल ने कहा कि 10 किलोग्राम बीज के लिए एक पैकेट(दो सौ ग्राम) मूंग या उड़द के कल्चर को फसल के अनुसार लेकर आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ या चीनी डालकर गर्म करते हैं। पानी के ठंडा होने के उपरांत राइजोबियम कल्चर मिला देते हैं। 10 किलो बीज में हाथों की सहायता से मिलाकर हवा में सूखने देते हैं। तत्पश्चात बीजों की खेत में बुवाई करते हैं। उन्होंने बताया कि प्रयोगों द्वारा सिद्ध हुआ है कि दलहनी फसलें 30 से 50 किलोग्राम तक नाइट्रोजन प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर भूमि में संचित करती हैं। जिससे किसानों को कम खर्च में अधिक फसल उत्पादन एवं आर्थिक लाभ होता है।